जनगणना २०११ में पलायन परिदृष्य : उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में

घनानन्द पलड़िया,
शोध छात्र, भूगोल विभाग
डी. एस. बी. परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

डॉ. बी. आर. पन्त
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष भूगोल विभाग,
एम. बी. पी. जी. कॉलेज हल्द्वानी,
नैनीताल

डॉ आर. सी जोशी
प्रोफेसर,
डी. एस. बी. परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,नैनीताल

प्रस्तावना-

प्रवास का अभिप्राय व्यक्ति या आबादी का अपने वर्तमान अथवा मूल स्थान को छोड़कर अन्यत्र कम या अधिक समय के लिये अथवा स्थाई रूप से बसने से है। इस प्रक्रिया से मूल (जनन) तथा गन्तव्य क्षेत्रों की आबादी के स्वरूप एवं संरचना में परिवर्तन आता है। जनसंख्या परिवर्तन के अध्ययन में जन्म एवं मृत्यु की तरह प्रवास भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रवास से किसी भी क्षेत्र की आबादी की संरचना/संगठन में धीरे-धीरे लेकिन बहुत परिवर्तन आ जाते हैं। जहाँ से प्रवास होता है, वहाँ की आबादी घट जाती है, जहाँ पहुंचता है वहाँ बढ़ जाती है और महिला-पुरूष अनुपात में भी अन्तर आता है। दोनों क्षेत्रों में सांस्कृतिक-सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन भी देखें जाते हैं जो व्यक्ति प्रवासित हो कर नई जगह पर आता है वहाँ अपने साथ अपनी परम्परागत सांस्कृतिक परम्परा भी लाता है। थोड़ा वहाँ की संस्कृति को अपनाता है, स्वयं जैसा था उसमें भी परिवर्तन आ जाता है, फलस्वरूप एक मिली जुली नई संस्कृति का विकास हो जाता है। इस पूरी प्रकिया में क्षेत्रीय स्तर पर कई महत्वपूर्ण तत्वों एवं सम्बन्धों को समझा जा सकता है। कुछ विद्वानों में प्रवास को निवास स्थान का परिवर्तन कहा है। लेकिन उसमें उसके सामुदायिक लगाव में परिवर्तन तथा पुनर्समायोजन निहित है। सर्कुलेशन, कम्युटिंग तथा ट्रांसह्यूमेन्न में भी स्थान छोड़ने की क्रिया होती है। लेकिन ये सभी प्रवास की श्रेणी में नहीं आते हैं। प्रवास एक निश्चित क्रियाशील आयु वर्ग के लोगों के द्वारा होता है, जिनकी आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ नई जगह की नई स्थितियों के अनुकूल परिवर्तित होने की पर्याप्त क्षमता के कारण गतिशीलता होती है। ऐसे में यदि वह परिवार का मुख्य व्यक्ति होता है तो परिवार के सभी लोग प्रवास में सम्मिलित हो जाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत आलेख का मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड में पलायन परिदृश्य पर प्रकाश डालना है। इसके अन्तर्गत उत्तराखण्ड में तहसीलवार जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ उत्तराखण्ड में ग्रामीण से ग्रामीण, ग्रामीण से शहर, शहर से शहर तथा शहर से गाँवों की ओर को कितना पलायन हुआ है और पलायन के कारण तथा समाधान पर प्रकाश डालना है। अनुसंधान कार्य क्षेत्र विशेष की वास्तविक तस्वीर और विभिन्न जानकारी प्रस्तुत करने के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में पलायन की स्थिति को स्पष्ट करने से वहाँ पलायन की वास्तविक तस्वीर स्पष्ट होगी। यह शोध कार्य प्रवास पर अनुसंधान और स्थानीय नीतियों के निर्माण के साथ ही राष्ट्रीय स्तर के क्षेत्रों में भी योगदान देगा, ऐसी उम्मीद है।

शोध साहित्य

प्रवास से सम्बन्धित अध्ययनों का यदि सैद्धान्तिक विश्लेषण किया जाय तो इस क्षेत्र में पूर्व प्रतिस्थापित अनेक सिद्धान्त परिलक्षित होते हैंह इन सिद्धान्तों में रेवेन्स्टीनह लीह लेविस के सिद्धान्त प्रमुख हैं। रेवेन्स्टीन का प्रव्रजन सिद्धान्त ग्रामीण नगरीय प्रवास की सैद्धान्तिक व्याख्या १८८० के बाद तब प्रारम्भ हुई जब रेवेन्स्टीन ने सर्वप्रथम प्रव्रजक के सिद्धान्त को प्रस्तावित किया। इनके अनुसार प्रव्रजक निम्न अवसर वाले क्षेत्रों से उच्च अवसर वाले क्षेत्रों की ओर प्रव्रजन करते हैं। प्रव्रजनों के सामने यदि गन्तव्य स्थान के चयन का विकल्प होता है तो ग्रामीण क्षेत्र का प्रवास सर्वप्रथम निकटतम के कस्बों को प्रवास करता है और बाद में बड़ें नगरों की ओर। ग्रामीण-नगरीय प्रव्रजन एक समानान्तर नगरीय-ग्रामीण प्रवाह को जन्म देता है। ग्रामीण निवासियों की तुलना में नगरीय निवासी कम प्रव्राजी होते हैं। प्रवास की गतिह यातायात एवं संचार के साधनों में वृद्धि एवं व्यापार तथा उद्योग के विकास से प्रभावित होती है।

ग्रामीण नगरीय श्रमिक स्थानान्तरण की प्रक्रिया का अध्ययन करने के उद्देश्य से ञलेविसृ न एक महत्वपूर्ण

प्रतिमान विकसित किया जिसका बाद में फी और रेनिस ने प्रसार किया। इस मिले जुले सैद्धान्तिक प्रतिमान को एल६ एफ६ आर६ विकास प्रतिमान के नाम से जाना जाता है। इस प्रतिमान के अनुसार प्रवास सन्तुलन की एक प्रक्रिया है। ओबराय एवं सिंह (१६६१) ने ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में प्रवास के परिणामी प्रभावों का अध्ययन किया है। मुखर्जी (१६६६) ने जाटों के प्रवास का अध्ययन किया है। भारतीय जनगणना के आँकड़ों के अनुसार भारत में अधिकांश उत्प्रवास की प्रक्रिया सीधे गाँव से नगर को हुई हैं नकि मध्यम छोटे कस्बों को। मैठाड़ी और नौटियाल (२०१०) ने उत्तराखण्ड हिमालय के जनपद पौढ़ी में जनसंख्या की गतिशीलता का अध्ययन किया है। जितेन्द्र बहादुर सिंह (१६८६ एवं १६८७) ने गोरखपुर जनपद में प्रवास के प्रभाव और गोरखपुर नगर के चतुर्दिक जनसंख्या प्रवास की प्रवृत्ति का अध्ययन किया है। चन्द एवं तड़ागी आर. सी. एस. (१६६६) ने उत्तराखण्ड वासियों के बहिर्प्रव्रजन का अध्ययन किया है। खनका (१६८४) ने कुमाऊँ क्षेत्र में प्रवास और पिथौरागढ जिले के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाले हैं। शमशाद एवं हसन (२०११) ने भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में पुरूष प्रवास के निर्धारक तत्वों का अध्ययन किया है। खान और शमशाद (२०११) ने भारत में ग्रामीण पुरूष आबादी का शहरों की ओर पलायन का अध्ययन किया है। मुखर्जी (२०००) ने शहरी विकास प्रवास और शहरी एवं क्षेत्रीय योजना और रणनीति तथा युसुफ खान (१६६३) ने भारत में अप्रवासियों के वितरण में बदलाव का अध्ययन किया है। पंत, बी. आर. चंद, आर. मेहता, बी. एस (२०२२) ने उत्तराखण्ड जनसंख्या परिदृश्य एवं परिवर्तन का अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त बागची (१६६४), बसु (२००१), भट्टाचार्य (२००२), चटर्जी (२००४), डोभाल (१६८१), गुप्ता (२००३), खैरकार (२००२ एवं २००३) खान, (१६६४), मुखर्जी (२०००), शाहिद हसन एवं शाह (१६७६) शर्मा (१६८६) सामन्त खान एवं औथमैन (१६६३), सावन्त एवं खैरक (१६६८), तड़ागी एवं कुमार (१६६५), आदि ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास सम्बन्धी अध्ययन किये हैं।

अध्ययन क्षेत्र :

भारत का २७ वाँ राज्य उत्तराखण्ड राज्य ६ नवम्बर २००० को अस्तित्व में आया। इस राज्य में कुल १३ जिले हैं। इस राज्य को पुराणों में कुर्मांचल, केदारखण्ड, मानसखण्ड तथा उत्तराखण्ड की संज्ञा दी गयी है। यह राज्य भौतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विशिष्टताओं का एक अद्‌भुत दृश्य प्रस्तुत करता है। उत्तराखण्ड का विस्तार २८°४३' उत्तर से ३१°२७' उत्तरी अक्षांश तथा ७७°३४' पूर्व से ८१°१' पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इसका आकार लगभग आयताकार है। यह राज्य ५३,४८३ वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैला है। पूर्व से पश्चिम तक राज्य की लम्बाई लगभग ३५८ कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई लगभग ३२० कि.मी. है। इसके पूर्व में नेपाल, उत्तर में तिब्बत एवं चीन, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश तथा हरियाणा और दक्षिण में उत्तर प्रदेश स्थित हैं। प्राकृतिक सीमा बनाने का कार्य उत्तर में भारत-तिब्बत रेखा, पश्चिम में टौंस नदी, पूर्व में काली नदी, दक्षिण में तराई जल विभाजक की अन्तिम सीमा करता है।

मानचित्र : ०१ स्थिति मानचित्र

जनसंख्या वितरण-किसी भी क्षेत्र की आबादी का स्वरूप, वितरण, बृद्धि, घनत्व आदि पर उस क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण एवं तात्कालिक सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक परिवेश का प्रभाव पड़ता है। उत्तराखण्ड एक ऐसा प्रदेश है जिसका विस्तार तराई, भाबर, दून जैसे उपजाऊ मैदानी भू-भागों से लेकर ७८१७ मी. ऊँचे नंदादेवी शिखर तक है। लगभग १५ से २० प्रतिशत भाग तराई, भावर एवं दून के अन्तर्गत मैदानी हैं तो असंख्य नदियों/नालों ने अपने दोनों ओर पर्वतीय भू-भाग में ५ से १० प्रतिशत चौड़े-चौड़े फाटों (वेदिकाओं) का निर्माण किया है, जो कृषि उत्पादन की दृष्टि से तराई-भाबर से कम नहीं है। उत्तराखण्ड की वसासतों का इतिहास बताता है कि सबसे पहले आदमी ने इन्हीं नदियों के किनारे जहाँ उसे शुद्ध पानी तथा अन्नोत्पादन के लिए समतल एवं उपजाऊ भूमि मिली, में बसना प्रारम्भ किया। बढ़ती आबादी के साथ आदमी ने सहजता से अपेक्षाकृत उपयुक्त भूमि को अपना निवास बनाया। आवश्यकता बढ़ने पर विज्ञान के प्रसार एवं प्रचार के साथ मनुष्य ने उत्तराखण्ड के उन भागों में भी जहाँ जलवायु कठोर थी चाहे वह उच्च हिमालयी ठण्डी

जलवायु के क्षेत्र थे या फिर चाहे तराई भाबर जैसे नमी युक्त उष्ण कठोर पर्यावरण के क्षेत्र थे में भी अपना हस्तक्षेप बढ़ाया। वर्तमान में आबादी का सधन जमाव तराई-भाबर एवं दून क्षेत्रों में अधिक है। उससे कम आबादी नदी घाटियों में बसी है। उच्च एवं मध्य ढाल क्षेत्रों में विरल जनसंख्या रहती है उसमें भी पलायन से लगातार कमी ही नहीं आ रही है बल्कि गाँव के गाँव खाली होने के कगार पर हैं। उत्तराखण्ड में भारत की ०.८३ प्रतिशत आबादी रहती है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तराखण्ड देश के कुल क्षेत्रफल का १.६६ प्रतिशत भाग है, २००१ से २०११ के बीच उत्तराखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर १८.८१ प्रतिशत रही। उत्तराखण्ड राज्य में जनसंख्या विरलता से वसी है यहाँ जनसंख्या घनत्व १८६ व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी. है। उत्तराखण्ड में प्रति हजार पुरूषों में ९६३ महिलाएं हैं। जनगणना २०११ के अनुसार राज्य में ७८.८ प्रतिशत लोग साक्षर हैं जिनमें ८७.४ प्रतिशत पुरूष तथा ७० प्रतिशत महिलाएं हैं। २०११ में उत्तराखण्ड में मात्र ३०.२३ प्रतिशत लोग नगरीय क्षेत्रों में निवास करते हैं। राज्य की मात्र ४७.६ प्रतिशत आबादी कार्यशील है, जिसमें ५० प्रतिशत पुरूष तथा ४५.२ प्रतिशत महिलाएं हैं। उत्तराखण्ड में कुल आवादी का १८.८ प्रतिशत अनुसूचित जाति और २.६ प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या निवास करती है।

जनसंख्या वृद्धि-तहसील स्तर पर यदि ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या वृद्धि पर विचार करें तो ज्ञात होता है कुल २४.४ प्रतिशत तहसीलों की आबादी २००१ से २०११ में न्यूनतम ०.०५ प्रतिशत से अधिकतम १४.७५ प्रतिशत घट गई। इसके अन्तर्गत मुख्यतः मुन्स्यारी, थलीसैंण, रानीखेत, कर्णप्रयाग, द्वाराहाट, काण्डा रूद्रप्रयाग, चौखुटिया, जाखड़ीधार, डीडीहाट, सल्ट, पौड़ी, भिकियासैंण, धूमाकोट, टिहरी, सतपुली, लैंसडाउन, चौवट्टाखाल एवं यमकेश्वर तहसीलें हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो रहा है कि दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि कम होने के साथ ही जनसंख्या ह्रास भी दर्ज किया गया है। ह्रास या कम वृद्धि का कारण युवा पीढ़ी का रोजगार एवं शिक्षा के लिए पलायन है रोजगार एवं अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद लोग अपने परिवार के शेष सदस्यों को भी साथ ले जाते हैं। वरिष्ठ नागरिकों को अपनी माटी से लगाव एवं अन्यत्र मन नहीं लगने के कारण अपने गाँवों में रहना बेहतर लगता है जिन परिवारों के युवाओं को वहीं पर कुछ रोजगार/व्यवसाय मिल गये हैं वही लोग गाँवों में रह रहे हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में पीढ़ियों से चली आ रही कृषि व्यवस्था से भरण-पोषण नहीं हो पाने के कारण पलायन जारी है। स्थानीय संसाधनों का उचित और वैज्ञानिक तरीकों से उपयोग नहीं होने के कारण वहां पर स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पा रही है। हमें परम्परागत विधियों को नये ढंग से परिमार्जित करते हुए आर्थिक विकास पर युवाओं को रोकने के लिए योजनायें बनानी होंगी।

द्वितीय वर्ग में न्यून वृद्धि ०.०१ से १० प्रतिशत वृद्धि वाले तहसीलों को रखा गया है, इसके अन्तर्गत सर्वाधिक ३७.१८ प्रतिशत तहसीलें हैं। १०.०१ से २० प्रतिशत वृद्धि वाले १९.२ प्रतिशत तहसीलें हैं। इनमें चम्पावत, मोरी, पुरोला, कालाढूँगी, जोशीमठ, धारचूला, पाटी, चिन्यालीसौंड़, राजगढ़ी, धारी, रूड़की, धनौल्टी, त्यूनी, चकराता तथा श्रीनगर तहसीलें मुख्य हैं। इस वर्ग की तहसीलें या तो शहरों के नजदीक या अपेक्षाकृत समतल अर्थात संसाधन समानता के साथ संरचनात्मक सुविधा सम्पन्न भी हैं। २००१ से २०११ के बीच २०.१ से ३० प्रतिशत वृद्धि वाली तहसीलें मैदानी क्षेत्रों में स्थित हैं। इनमें देहरादून, गदरपुर, पूर्णागिरि, विकासनगर, लक्सर, जसपुर, हल्द्वानी, लालकुआँ तथा सितारगंज तहसीलें हैं। ३०.१ प्रतिशत से अधिक ५०.४ प्रतिशत वृद्धि श्रेणी के अन्तर्गत ७.७ प्रतिशत तहसीलें हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक जनसंख्या में वृद्धि काशीपुर (५०.४ प्रतिशत तक) तथा किच्छा (४५.३) प्रतिशत तहसीलें हैं। ग्रामीण आबादी में भी वृद्धि को देखने से स्पष्ट हो रहा है पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित तहसीलों की जनसंख्या घट रही है और मैदानी क्षेत्रों में स्थित तहसीलों की जनसंख्या बढ़ रही है। जनसंख्या घटने बढ़ने का मुख्य कारण पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित तहसीलों से मैदानी क्षेत्रों में स्थित तहसीलों की ओर पलायन है। यहाँ पर भी अधिकांश प्रवासी लोगों की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी नहीं होती है। जिससे वे शहरी क्षेत्रों को अपना आशियाना नहीं बना पाते हैं और शहरों से लगे ग्रामीण क्षेत्रों का ही चयन कर बस जाते हैं। अपनी आजिविका नौकरी/पैंशन/दुकान आदि व्यवसायों के माध्यम से पूरा करते हैं। इन प्रवासियों में सेना के अवकाश प्राप्त सैनिकों की संख्या अधिक है।

तहसील स्तर पर नगरीय क्षेत्रों की २००१ से २०११ के वीच की वृद्धि को देखने से ज्ञात होता है कि उत्तराखण्ड की ७८ तहसीलों में से ४४.६ प्रतिशत तहसीलों में नगरीय आबादी ही नहीं रहती है अर्थात इन तहसीलों में नगरीय क्षेत्र ही नहीं हैं। जबकि ६.४ प्रतिशत अर्थात पाँच तहसीलों की नगरीय जनसंख्या २०११ में ३०.५ प्रतिशत तक घट गई है। टिहरी, रानीखेत, द्वाराहाट, लैंसडाउन तथा धारचूला तहसीलों में क्रमशः ०.७, ०.७, ११.१, २८.२५ तथा ३०.५ प्रतिशत नगरीय

जनसंख्या घट गई। इन तहसीलों में एक ओर नगरीय क्षेत्र बहुत कम है तथा दूसरी ओर कुछ में सैनिक छावनियों के रहते हुए विस्तार नहीं हो पाया। जो पहले से रहते थे वे भी धीरे-धीरे उन स्थानों को छोड़कर अन्यत्र बस गये। चमोली, पूर्णागिरि, भटवाड़ी, पौड़ी तथा श्रीनगर में मात्र १० प्रतिशत तक ही वृद्धि हुई है। क्योंकि इन तहसीलों में भी विस्तार तथा विकास की सम्भावनायें कम ही हैं। २००१ से २०११ के वीच १०.०१ से २० प्रतिशत तक वृद्धि मात्र ६ प्रतिशत तहसीलों में हुई है। इनमें लक्सर, रामनगर, लालकुआँ, बागेश्वर, देवप्रयाग, नैनीताल तथा राजगढ़ी मुख्य हैं। जोशीमठ, जसपुर, ऊँखीमठ, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, बाजपुर, कालाढूँगी, चम्पावत एवं कर्णप्रयाग तहसीलों में २०.०१ से ३० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उत्तराखण्ड की ७.७ प्रतिशत तहसीलों में ३०.०१ से ४० प्रतिशत नगरीय आबादी में वृद्धि हुई। इनमें से गदरपुर, लोहाघाट, डीडीहाट, सितारगंज, देहरादून तथा काशीपुर हैं। ४०.०१ प्रतिशत से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि वाले १४.१ प्रतिशत तहसीलें हैं। सर्वाधिक ३१३.६ प्रतिशत वृद्धि रूद्रप्रयाग तहसील में हुई जबकि खटीमा, विकासनगर, रूड़की, हल्द्वानी, किच्छा, कोटद्वार, चकराता, हरिद्वार, रिषिकेष तथा नरेन्द्रनगर में क्रमशः २२५.४, १४१.४, ६६.१, ५४.१, ५२.४, ५१.७, ४६.४, ४५.४, ४२.५, तथा ४०.८ प्रतिशत वृद्धि हुई। नगरीय आबादी में पर्वतीय तथा मैदानी तहसीलों में अधिक अन्तर नहीं है क्योंकि पर्वतीय क्षेत्रों में भी लोगों ने नजदीकी शहर का विकल्प चुना है। सुविधाओं तथा रोजगार/व्यवसाय की सम्भावनायें जिन नगरीय क्षेत्रों में अधिक रही वहीं प्रवास बढ़ता गया है।

पलायन परिदृश्य

कुल प्रवास-२०११ की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल आबादी (१००८६२६२ व्यक्ति) में से ४४.२ प्रतिशत (४४५७६८६ व्यक्ति) आबादी प्रवासी की श्रेणी के अन्तर्गत हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ३७.४७ प्रतिशत आबादी प्रवासी है। इस आधार पर स्पष्ट हो रहा है कि उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय स्तर से लगभग ७ प्रतिशत प्रवासी आबादी अधिक है। उत्तराखण्ड की कुल पुरूष आबादी से ३०.०४ प्रतिशत प्रवासी पुरूष हैं जो राष्ट्रीय स्तर पर मात्र २२.६२ प्रतिशत ही है। महिला आबादी में से उत्तराखण्ड की ५८.८६ प्रतिशत महिला प्रवासी की श्रेणी के अन्तर्गत पंजीकृत हैं तो राष्ट्रीय स्तर पर इससे कम ५३.२३ प्रतिशत महिलाएं ही प्रवासी हैं। यहाँ पर महिलाओं की प्रवासी की श्रेणी में अधिकता का कारण विवाह के बाद उन्हें प्रवासी की श्रेणी में रखना है। उत्तराखण्ड की कुल ग्रामीण आबादी (७० प्रतिशत) में से ४४.७१ प्रतिशत ग्रामीण आबादी प्रवासी की श्रेणी में है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण आबादी में से ३७ प्रतिशत आबादी ही प्रवासी है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली पुरूष आबादी में से २६.८७ प्रतिशत पुरूष प्रवासी हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर पर १८.६६ ५ प्रतिशत पुरूष प्रवासी हैं। इसके विपरीत कुल ग्रामीण महिला आबादी में से उत्तराखण्ड में ६२.५५ प्रतिशत महिलाएं प्रवासी हैं, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ५६.३१ प्रतिशत महिलाएं ही प्रवासी की श्रेणी में हैं। उत्तराखण्ड में लगभग ३० प्रतिशत आबादी नगरीय हैं, जिसमें से ३२.६७ प्रतिशत आबादी प्रवासी के रूप में पंजीकृत हैं, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर उत्तराखण्ड से कम २७.३५ प्रतिशत नगरीय आबादी प्रवासी है। नगरों में रहने वाली पुरूष आबादी में से २८.०४ प्रतिशत उत्तराखण्डी पुरूष प्रवासी हैं जो कुल ग्रामीण प्रवासी से अधिक हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भी नगरीय आबादी में ग्रामीण प्रवासी पुरूष से अधिक २२.६० प्रतिशत पुरूष प्रवासी हैं। अर्थात ग्रामीण पुरूष आबादी में शहर की अपेक्षा कम पलायन होता है। महिलाओं की शहरों में रहने वाली कुल आबादी से उत्तराखण्ड में ३७.६१ प्रतिशत महिलाएं प्रवासी की श्रेणी में हैं जो ग्रामीण प्रवासी महिलाओं से बहुत कम है। राष्ट्रीय स्तर पर भी लगभग यही स्थिति है जहाँ कुल शहरी महिलाओं से मात्र ३२.१६ प्रतिशत महिलाएं प्रवासी की श्रेणी में हैं।

तालिका : भारत एवं उत्तराखण्ड में जन्म स्थान के आधार पर प्रवास, २०११

क्षेत्र का नाम	कुल ग्रामीण	अन्तिम आवास ग्रामीण/नगरीय	प्रवास					
			व्यक्ति	प्रतिशत	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8	9
भारत	कुल	कुल	45,36,41,955	37.47*	14,09,62,280	22.62	31,26,79,675	53.23
भारत	कुल	ग्रामीण	30,84,36,693	37.00**	7,99,10,254	18.69	22,85,26,439	56.31
भारत	कुल	नगरीय	10,31,59,179	27.35***	4,47,59,786	22.90	5,83,99,393	32.16
भारत	ग्रामीण	कुल	27,10,75,445	59.76$	5,75,91,406	40.86	21,34,84,039	68.28
भारत	ग्रामीण	ग्रामीण	22,58,25,490	73.22#	4,22,47,144	52.87	18,35,78,346	80.33
भारत	ग्रामीण	नगरीय	2,38,41,175	23.11##	88,08,768	19.68	1,50,32,407	25.74
भार	शह	कुल	18,25,66,510	40.24$	8,33,70,874	59.14	9,91,95,636	31.72

त	री							
भारत	शहरी	ग्रामीण	8,26,11,203	26.78#	3,76,63,110	47.13	4,49,48,093	19.67
भारत	शहरी	नगरीय	7,93,18,004	76.89##	3,59,51,018	80.32	4,33,66,986	74.26
उत्तराखण्ड	कुल	कुल	44,57,986	44.20*	15,43,627	30.04	29,14,359	58.89
उत्तराखण्ड	कुल	ग्रामीण	31,46,237	44.71**	9,45,682	26.87	22,00,555	62.55
उत्तराखण्ड	कुल	नगरीय	9,96,128	32.67***	4,53,833	28.04	5,42,295	37.91
उत्तराखण्ड	ग्रामीण	कुल	27,47,243	61.63$	7,32,742	47.47	20,14,501	69.12
उत्तराखण्ड	ग्रामीण	ग्रामीण	23,14,424	73.56#	5,42,993	57.42	17,71,431	80.50
उत्तराखण्ड	ग्रामीण	नगरीय	2,69,261	27.03##	1,20,916	26.64	1,48,345	27.36
उत्तराखण्ड	शहरी	कुल	17,10,743	38.37$	8,10,885	52.53	8,99,858	30.88
उत्तराखण्ड	शहरी	ग्रामीण	8,31,813	26.44#	4,02,689	42.58	4,29,124	19.50
उत्तराखण्ड	शहरी	नगरीय	7,26,867	72.97##	3,32,917	73.36	3,93,950	72.64

* कुल आबादी का प्रतिशत कुल ग्रामीण आबादी का प्रतिशत

*** कुल नगरीय आबादी का प्रतिशत

$ कुल प्रवासियों का प्रतिशत रु कुल ग्रामीण प्रवासी प्रतिशत

कुल शहरी प्रवासी प्रतिशत और महिला पुरूष का प्रतिशत भी इसी तरह निकाला गया है।

२०११ की जनगणना के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल प्रवासी आबादी (४४५७९८६ व्यक्ति) में से ६१.६३ प्रतिशत ग्रामीण हैं शेष ३८.३७ प्रतिशत प्रवासी नगरीय हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कुल प्रवासियों में से ५९.७६ प्रतिशत ग्रामीण तथा ४०.२४ प्रतिशत नगरीय प्रवासी हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कुल ग्रामीण प्रवासियों (३०८४३६६९३व्यक्ति) में से ७३.२२ प्रतिशत प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों अथवा गाँव से गाँव को प्रवास करने वाले हैं, शेष २६.७८ प्रतिशत प्रवासियों ने नगरों से गाँवों को पलायन किया, राष्ट्रीय स्तर पर कुल नगरीय प्रवासियों (१०३१५९१७९ व्यक्ति) में से २३.११ प्रतिशत व्यक्तियों ने गाँवों से नगर की ओर तथा ७६.८९ प्रतिशत लोगों का नगर से नगर को पलायन हुआ जबकि उत्तराखण्ड के कुल ग्रामीण प्रवासियों (३१४६२३७ व्यक्ति) में से ७३.५६ प्रतिशत गाँवों से गाँवों को तथा २६.४४ प्रतिशत का नगरों से गाँवों को पलायन हुआ। कुल नगरीय प्रवासियों (९९६१२८) में से २७.०३ प्रतिशत प्रवासियों ने गाँवों से नगर को तथा ७२.९७ प्रतिशत प्रवासियों का नगर से नगर को पलायन हुआ। जनगणना २०११ द्वारा प्रकाशित आँकड़ों से आशय निकाला जा सकता है। कि लगभग तीन चौथाई ग्रामीण प्रवासियों का गाँव से गाँव तथा एक चौथाई प्रवास शहर से गाँव को हुआ। जबकि नगरीय प्रवासियों में से तीन चौथाई प्रवास नगर से नगर को तथा एक चौथाई का नगर का गाँव को हुआ।

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है कि भारत की कुल पुरूष आबादी में से २२.६२ प्रतिशत कुल ग्रामीण पुरूष आबादी से १८.६९ तथा कुल नगरीय पुरूष आबादी में से २२.९ प्रतिशत पुरूष प्रवासियों की श्रेणी में हैं। इसी प्रकार भारत की कुल महिला आबादी से ५३.२३ प्रतिशत, कुल ग्रामीण महिला आबादी से ५६.३१ प्रतिशत तथा कुल नगरीय महिला आबादी ३२.१६ प्रतिशत महिलाओं को जनगणना २०११ द्वारा प्रवासी की श्रेणी में सम्मिलित किया गया है। भारत के कुल पुरूष प्रवासियों (१४०९६२२८० व्यक्ति) में ४०.८६ प्रतिशत पुरूष ग्रामीण तथा ५९.१४ प्रतिशत नगरीय हैं। इसी प्रकार राष्ट्र की कुल महिला प्रवासियों में से ६८.२८ प्रतिशत ग्रामीण तथा ३१.७२ प्रतिशत नगरीय महिला प्रवासी हैं। इस प्रकार निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला प्रवासी अधिक होते हैं।

पलायन के कारण-

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित आँकड़ों जनगणना २०११ के अनुसार उत्तराखण्ड में प्रवास के कारण की दृष्टि से देखें तो कुल आबादी में से १४.९० प्रतिशत कार्य रोजगार, ०.५२ प्रतिशत व्यापार, ४२.६४ प्रतिशत शादी, ३.६२ प्रतिशत जन्म के बाद, २६.३० प्रतिशत परिवार के साथ तथा ८.९२ प्रतिशत व्यक्तियों ने अन्य कारणों से प्रवास किया।

तालिका : भारत एवं उत्तराखण्ड में प्रवास के कारण, २०११ (प्रतिशत कुल प्रवासी जनसंख्या)

क्षेत्र का नाम	कुल ग्रामीण	अन्तिम आवास ग्रामीण/ नगरीय	कार्य रोजगार प्रतिशत	व्यापार (प्रतिशत)	शिक्षा (प्रतिशत)	शादी (प्रतिशत)	जन्म के बाद प्रवास	परिवार के साथ प्रवास	अन्य कारण
			P	व्यक्ति	व्यक्ति	व्यक्ति	व्यक्ति	व्यक्ति	व्यक्ति
1	2	3	7	10	13	16	19	22	25
भारत	कुल	कुल	10.22	0.96	1.77	49.35	10.57	15.39	11.74
भारत	कुल	ग्रामीण	9.44	0.73	1.60	59.62	8.23	12.66	7.71
भारत	कुल	नगरीय	13.90	1.63	2.31	27.19	17.58	24.30	13.09
भारत	ग्रामीण	कुल	4.51	0.41	1.16	65.27	10.57	8.39	9.69
भारत	ग्रामीण	ग्रामीण	4.23	0.36	1.11	70.60	8.38	7.72	7.60
भारत	ग्रामीण	नगरीय	6.97	0.72	1.65	37.13	31.97	14.83	6.73
भारत	शहरी	कुल	18.71	1.77	2.66	25.72	10.57	25.78	14.79
भारत	शहरी	ग्रामीण	23.70	1.74	2.93	29.62	7.84	26.16	8.01
भारत	शहरी	नगरीय	15.99	1.90	2.51	24.21	13.25	27.14	15.00
उत्तराखण्ड	कुल	कुल	14.90	0.52	3.11	42.64	3.62	26.30	8.92
उत्तराखण्ड	कुल	ग्रामीण	14.52	0.37	2.79	51.00	1.79	23.80	5.73
उत्तराखण्ड	कुल	नगरीय	18.41	0.95	4.44	23.99	6.40	35.68	10.13
उत्तराखण्ड	ग्रामीण	कुल	10.87	0.30	2.16	55.65	2.33	20.41	8.27
उत्तराखण्ड	ग्रामीण	ग्रामीण	10.35	0.26	1.94	61.60	1.63	18.36	5.86
उत्तराखण्ड	ग्रामीण	नगरीय	17.57	0.65	4.32	24.23	3.75	39.14	10.34
उत्तराखण्ड	शहरी	कुल	21.36	0.86	4.64	21.74	5.68	35.76	9.96
उत्तराखण्ड	शहरी	ग्रामीण	26.14	0.69	5.15	21.51	2.22	38.93	5.37
उत्तराखण्ड	शहरी	नगरीय	18.72	1.07	4.48	23.91	7.38	34.39	10.05

स्रोत : भारत की जनगणना २०११, डी-५ माइग्रेसन (अनन्तिम आँकड़े)
सारणी लगातार

महिला एवं पुरूषों के प्रवास में भिन्नता होती है। कुछ स्थितियाँ ऐसी होती है जिसमें पुरूष रोजगार की तलाश में अन्यत्र चला जाता है जिसे आर्थिक कारणों से किया प्रवास कहते हैं जबकि पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में विवाह के बाद महिलाएं अपने माता एवं पिता के निवास/स्थान को छोड़कर हमेशा के लिये पति के निवास स्थान/जगह पर चली जाती है जो एक तरह से पूर्णतः महिलाओं का प्रवास कहा जाता है। यद्यपि इस प्रकार का महिला प्रवास एक सामाजिक व्यवस्था का अनिवार्य एवं अभिन्न हिस्सा है। इस प्रक्रिया में

क्षेत्रीय आबादी में विशेष अन्तर नहीं आना चाहिए क्योंकि जहाँ से प्रवास होता है वहाँ भी तो शादी के बाद लड़कियाँ आती हैं और जहाँ गन्तव्य होता है वहाँ की लड़कियाँ भी शादी के बाद दूसरे स्थानों को जाती है। तो इस प्रकार की गतिशीलता से सन्तुलन बना रहता है। हमारी दृष्टि में इसे प्रवास न कहकर सामाजिक गतिशीलता कहना अधिक प्रासांगिक होगा। कई स्थानों में जहाँ पुरूषों की अधिक आवश्यकता होती है अर्थात खनन क्षेत्रों एवं बड़ी-बड़ी मशीनों को चलाने के लिये पुरूषों की आवश्यकता होती है, वहाँ से लड़कियों एवं महिलाओं का शहरों की ओर को रोजगार की तलाश में पलायन होता है। प्रवास के मुख्यतः कारण-(आर्थिक एवं सामाजिक), दूरी (लम्बी दूरी एवं लघु दूरी) तथा समय (अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन) के आधार पर बाँटा जा सकता है। इनके अतिरिक्त प्रवास को क्षेत्र के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त प्रवास को क्षेत्र के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। इसमें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के प्रवास को आन्तरिक तथा एक देश से दूसरे देश के प्रवास को बाह्य या अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास की श्रेणी में रखा जा सकता है। भारत की जनगणना विभाग द्वारा आन्तरिक प्रवास (जन्म स्थान के आधार पर) को चार वर्गों में बाँटा गया है। इसमें गाँव से शहर, शहर से शहर, गाँव से गाँव तथा शहर से गाँव (ग्रामीण से नगरीय, ग्रामीण से ग्रामीण, नगरीय से ग्रामीण तथा नगरीय से नगरीय) मुख्य हैं।

सारांश-

तहसील स्तर पर नगरीय क्षेत्रों की २००१ से २०११ के वीच की वृद्धि को देखने से ज्ञात होता है कि उत्तराखण्ड की ७८ तहसीलों में से ४४.६ प्रतिशत तहसीलों में नगरीय आबादी ही नहीं रहती है अर्थात इन तहसीलों में नगरीय क्षेत्र ही नहीं हैं जबकि ६.४ प्रतिशत अर्थात पाँच तहसीलों की नगरीय जनसंख्या २०११ में ३०.५ प्रतिशत तक घट गई है। इन तहसीलों में एक ओर नगरीय क्षेत्र बहुत कम है तथा दूसरी ओर कुछ में सैनिक छावनियों के रहते हुए विस्तार नहीं हो पाया जो पहले से रहते थे वे भी धीरे-धीरे उन स्थानों को छोड़कर अन्यत्र बस गये। २००१ से २०११ के वीच १०.०१ से २० प्रतिशत तक वृद्धि मात्र ६ प्रतिशत तहसीलों में हुई है। उत्तराखण्ड की ७.७ प्रतिशत तहसीलों में ३०.०१ से ४० प्रतिशत नगरीय आबादी में वृद्धि हुई। इनमें से गदरपुर, लोहाघाट, डीडीहाट, सितारगंज, देहरादून तथा काशीपुर हैं। ४०.०१ प्रतिशत से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि वाले १४.१ प्रतिशत तहसीलें हैं। सर्वाधिक ३१३.६ प्रतिशत वृद्धि रूद्रप्रयाग तहसील में हुई है। नगरीय आबादी में पर्वतीय तथा मैदानी तहसीलों में अधिक अन्तर नहीं है क्योंकि पर्वतीय क्षेत्रों में भी लोगों ने नजदीकी शहर का विकल्प चुना है। सुविधाओं तथा रोजगार/व्यवसाय की सम्भावनायें जिन नगरीय क्षेत्रों में अधिक रही वहीं प्रवास बढ़ता गया है। २०११ की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल आबादी (१००८६२६२ व्यक्ति) में से ४४.२ प्रतिशत (४४५७६८६ व्यक्ति) आबादी प्रवासी की श्रेणी के अन्तर्गत हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ३७.४७ प्रतिशत आबादी प्रवासी है।

उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय स्तर से लगभग ७ प्रतिशत प्रवासी आबादी अधिक है। उत्तराखण्ड की कुल पुरूष आबादी से ३०.०४ प्रतिशत प्रवासी पुरूष हैं जो राष्ट्रीय स्तर पर मात्र २२.६२ प्रतिशत ही है। महिला आबादी में से उत्तराखण्ड की ५८.८६ प्रतिशत महिला प्रवासी की श्रेणी के अन्तर्गत पंजीकृत हैं तो राष्ट्रीय स्तर पर इससे कम ५३.२३ प्रतिशत महिलाएं ही प्रवासी हैं। उत्तराखण्ड की कुल ग्रामीण आबादी (७० प्रतिशत) में से ४४.७१ प्रतिशत ग्रामीण आबादी प्रवासी की श्रेणी में है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण आबादी में से ३७ प्रतिशत आबादी ही प्रवासी है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली पुरूष आबादी में से २६.८७ प्रतिशत पुरूष प्रवासी हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर पर १८.६६ ५प्रतिशत पुरूष प्रवासी हैं। कुल ग्रामीण महिला आबादी में से उत्तराखण्ड में ६२.५५ प्रतिशत महिलाएं प्रवासी हैं, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ५६.३१ प्रतिशत महिलाएं ही प्रवासी की श्रेणी में हैं। २०११ की जनगणना के अनन्तिम आँकड़ों के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल प्रवासी आबादी (४४५७६८६ व्यक्ति) में से ६१.६३ प्रतिशत ग्रामीण हैं शेष ३८.३७ प्रतिशत प्रवासी नगरीय हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कुल प्रवासियों में से ५६.७६ प्रतिशत ग्रामीण तथा ४०.२४ प्रतिशत नगरीय प्रवासी हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कुल ग्रामीण प्रवासियों (३०८४३६६६३व्यक्ति) में से ७३.२२ प्रतिशत प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों अथवा गाँव से गाँव को प्रवास करने वाले हैं, शेष २६.७८ प्रतिशत प्रवासियों ने नगरों से गाँवों को पलायन किया। राष्ट्रीय स्तर पर कुल नगरीय प्रवासियों (१०३१५६१७६ व्यक्ति) में से २३.११ प्रतिशत व्यक्तियों ने गाँवों से नगर की ओर तथा ७६.८६ प्रतिशत लोगों का नगर से नगर को पलायन हुआ। जबकि उत्तराखण्ड के कुल ग्रामीण प्रवासियों (३१४६२३७ व्यक्ति) में से ७३.५६ प्रतिशत गाँवों से गाँवों को तथा २६.४४ प्रतिशत का नगरों से गाँवों को पलायन हुआ। कुल नगरीय प्रवासियों (६६६१२८) में से २७.०३ प्रतिशत प्रवासियों ने गाँवों से नगर को तथा ७२.६७ प्रतिशत प्रवासियों का नगर से नगर को पलायन हुआ।

समाधान के उपाय-

पर्वतीय क्षेत्रों में हो रहे पलायन को रोकने के लिए इसके कारणों को खोजना होगा और समाधान के लिए नीतियों का खाका खींचना होगा, नीति बनाने वालों को यहाँ की समस्याओं के स्वरूप को समझना होगा। हमें इस बात पर भी गौर करना होगा कि देश के अन्य भागों से लोग यहाँ पर आकर बसना चाहते हैं। मैदानी क्षेत्रों से लोग पर्वतीय क्षेत्रों में आने के लिए अपनी प्राथमिकता देते हैं तब यहाँ के लोग बाहर क्यों जाते हैं। नीति निर्माताओं को इस बात पर भी गौर करना होगा कि जीवन की मूलभूत सुविधायें तथा जीने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हो जाने पर क्या कोई अपनी पितृभूमि को छोड़कर बाहर बसना चाहेगा। पहाड़ से पलायन रोकने के लिए हमें जीवन जीने की मूलभूत सुविधाओं तथा अनुकूल परिस्थितियों का विकास करना होगा तथा स्थानीय उत्पादों की महत्ता की समझ विकसित करनी होगी और नीति योजनाओं को बनाने के लिए क्षेत्र विशेष पर हो रहे शोधों को धरातल में लाना होगा।

सन्दर्भ

1. Amitajyoti, Bagchi (1994), A Study on "Pull Push" Factors Behind Inter Rigional Migration Over Nepal Himalaya, Indian Journal of Landscape Systems & Ecological Studies, Vol-17, (1) : 13-16.
2. Basu, R. (2001) Migration and the Migrants in Calcutta Metropolitan Area, Geographical Review of India, Vol. 63, (4) : 344-354.
3. Bhattacharyya, Sanghita (2002), Work Pattern of Migrants in India, Published by Geographical Review of India, Vol. 64, (1) : 40-50.
4. Chatterjee, Sisir (2004), Urbanization in Kolkata : A Study on Impact of Migration, Geographical Review of India, Vol. 66, (4) : 381-390.
5. Chandna, R. C. (2005), Inter-Religion Demographic Diversities in India, A Journal of the Association of Punjab Geographer India, Vol. 1, (1) : 4-17.
6. Dobhal, G. L. (Dec 1981), Money Order Remittances and Out Migration : A Case Study of Pouri Garhwal, National association Geographers India, Vlume- 1, (2) :
7. Census of India 2011, Migration, Drop–in–Article : 1-2.
8. Khairkar, V.P. (2002), Factors Affecting Volume of Migration in Nagpur City 1961-91, Geographical Review of India, Vol. (3) : 280-287.
9. Khan, J. H., Shamshad and Hasan Tarique, (2011) Determinants of Rural- Urban Migration of Male Population in India, National Association of Geographers India, vol. 31(1) : 51-65.
10. Khanka, S. S. (1984) ,Migration from Kumaon Region: Some Findings Based on a Sample Study of Pithoragarh District, Indian Journal Economics, Vol. 26 (4) : 302-312.
11. Mukherji, Shekhar(2000), Under development, Migration and urban and Regional Planning Strategies in India, Geographical Society Of India, Vol. 62 (3) : 235-248.
12. Pant B. R. (1995), The Central Himalaya:Geographical Outlook, in B.R. Pant and M. C. Pant (eds) Glimpses of Central Himalaya: A Socio-Economic and Ecological Perspective, Radha Publication, New Delhi, : 3-86.
13. Pant B. R., R Chand and B.S. Mehta. 2020. Physical and Demographic Study of Uttarakhand. In Jules Lessard and Orson Riviere (Eds) India: Environmental, Political and Social Issues.Nova Science Publishers, Inc. 415 Oser Avenue, Suite N, Hauppauge, NY 11788 USA.: 1-52.
14. Sati Vishwambhar Prasad and Singh R.B. (2009),Migration and Agrarian Changes in Mountain Regions : A Case Study of the Pindar Basin of uttarakha -nd Himalaya, India, National Association of Geographer India, vol. 29 (1) : 20-33.
15. Shahid, Hasan S.M. and Alam Shah (1976)Transhumance and Migration in Himalaya of Uttar Pradesh India, The National Geographer India, Vol. 23 (2) : 67-74.
16. Taragi R. C. S. And Kumar K. (1995), Migration Pattern in the Central Himalaya, in B. R. Pant and M. C. Pant (eds), Glimpses of Central Himalaya : Socio-Economic and Ecological Perspective, Radha Publication, new Delhi : 168-182.

१७.चान्दना, आर. सी. (२०१४),जनसंख्या भूगोल, नवम परिवर्धित संस्करण, कल्याणी पब्लिषर्स नई दिल्ली, : २७६–२९७।

१८.चन्द, आर. एवं तड़ागी आर. सी. एस. (१९९६) उत्तराखण्ड वासियों का वहिर्प्रव्रजन, उत्तराखण्ड आज अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा, : १७०–१७९। इण्डिया, अंक १,(१) और (२): ३१–४०।

१९.पंत, बी. आर. चंद, आर. मेहता, बी. एस (२०२२) : उत्तराखण्ड जनसंख्या परिदृष्य एवं परिवर्तन, पहाड़ फाउण्डेषन परिक्रमा तल्ला डांडा तल्लीताल नैनीताल ३०४।

२०.सिंह, जे. बी. (१९८७), गोरखपुर जनपद में जनसंख्या प्रव्रजन और उसका प्रभाव, प्रकाषन उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक–२३, (२) : ३९–५९।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com